

## Season's Greetings

The exchange of greetings amongst friends has been recorded from ancient times. Different countries and cultures have adopted their own unique ways to express affection, goodwill, gratitude and other sentiments during festivals. The celebrations of festivals serve to fulfil specific communal purposes. They offer a sense of belonging for religious, social, or geographical groups, contributing to group cohesiveness. They bring an opportunity to rejoice and provide an outlet to express the innate happiness. The traditional reasons of celebrations also include entertainment which was particularly important to local communities before the advent of mass-produced entertainment. Festivals that focus on cultural or ethnic topics also seek to inform community members of their traditions; the involvement of elders sharing stories and experience provides a means for unity among families.

The tradition of sending good wishes at the start of the New Year goes back many centuries, probably beginning with the Chinese and Egyptians who exchanged goodwill messages to ward off evil spirits. Sending them in the form of something written was a Roman tradition of the New Year. Gifts or greetings were sent on December 25th to ensure they arrived by January 1st. Though Christmas was rarely mentioned in this practice it was implied in many cases. The sending of holiday greetings is also tied to the ancient practice of mumming, when neighbours would go door to door dressed in costumes, seeking treats and conveying well wishes for the new year with short plays and performing skits and songs of general merriment.

The festival of Christmas is celebrated with extreme joy and enthusiasm. Though there are no historical records to tell if Jesus Christ was born on 25th December, but people have started celebrating his birth on this day because it was found favourable for people living in the dark and cold countries, as the day marks the Winter Solstice.

The legend of Santa Claus which is inseparable from the festival of Christmas, has a reference of St. Nicholas, who was born during the third century in the village of Patara. According to the popular stories, his wealthy parents, who raised him to be a devout Christian, died in an epidemic while Nicholas was still young. Nicholas used his whole inheritance to assist the needy and sick. One of the earliest legends that was attached to his name tells how St Nicholas heard of a man who could not afford the dowries for his three daughters, with the result that he intended - regretfully - to sell them to slavery. St. Nicholas saves them from this fate by throwing three bags of gold through their window at night: it is this tale which is often identified as the root of St Nicholas's reputation as a gift-giver. He dedicated his life in serving God and was made Bishop of Myra while still a young

man. Bishop Nicholas became known throughout the land for his generosity to those in need, his love for children, and his concern for sailors and ships. In the course of the development of his legend, St Nicholas does appear to have taken on some of the qualities/roles that originally belonged to the pagan deities Artemis and Poseidon.

In 1822, Clement Clarke Moore, an Episcopal minister, wrote a long Christmas poem "An Account of a Visit from St. Nicholas." Moore's poem, is largely responsible for our modern image of Santa Claus as the ageless, timeless, deathless white-bearded and red suited man who gives out gifts on Christmas. His poem helped popularize the now-familiar image of a Santa Claus who flew from house to house on Christmas Eve—in "a miniature sleigh" led by eight flying reindeer—leaving presents for deserving children. On January 1st 1881, Harper's Weekly published Thomas Nast's most famous image of Santa, complete with a big red belly, an arm full of toys and smoking a pipe! This image of Santa became so popular, that several artists started drawing Santa in his red and white costume. Today children all across the world wait for the gifts on Christmas day with the strong image of red clothed Santa coming on his sleigh in the night.

With time the technology has extended the reach of human, providing several means of conveying Greetings. The exchange of greetings via social media, text, and electronic media has expanded, but the post remains the most popular and predominant mode of transmission. The charm of receiving the greetings with the beautiful stamps embellishing the envelopes is incomparable. It conveys to the recipient the extra effort and care that have gone into it to send the wishes.

The Department of Posts has been issuing the Seasons' Greeting from time to time since 1990, and carrying out the role of harbingers of glad tidings. The attempt is always to add an extra dimension to the thought expressed, reinforcing the spirit of the message and making it more eloquent.

The colourful stamps on Season's greetings this year have been designed to celebrate the legend of Santa Claus and to evoke the sense of pleasantness and happiness associated with it.

The Department of Posts in an attempt to make the medium of communication more evocative, is bringing out two stamps on the theme of Season's Greetings.

### Credits:-

Text	: Based on the material available on internet
Stamp / Miniature Sheet / Sheetlet / FDC / Brochure / Cancellation Cachet	: Sh. Brahm Prakash

भारतीय डाक विभाग  
DEPARTMENT OF POSTS  
INDIA



शुभकामनाएं  
*Season's Greetings*

विवरणिका  
BROCHURE

## शुभकामनाएं

मित्रों के बीच शुभकामनाएं भेजना और ग्रहण करना प्राचीन काल से चलता आया है। त्योहारों के दौरान विभिन्न देशों तथा संस्कृतियों ने स्नेह, सद्भाव, कृतज्ञता तथा अन्य भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए अपने तरह के अनूठे तरीकों को अंगीकार किया है। त्योहारों के उत्सव से विभिन्न सामुदायिक उद्देश्य पूर्ण होते हैं। ये धार्मिक, सामाजिक अथवा भौगोलिक समूहों को आपस में मिल-जुल कर रहने तथा इनके समूह को एक सूत्र में बंधे रहने का भाव जगाते हैं। ये खुशियां मनाने का अवसर प्रदान करते हैं तथा ये स्वाभाविक प्रसन्नता को अभिव्यक्ति प्रदान करने का माध्यम बनते हैं। उत्सव मनाने के पारम्परिक कारणों में मनोरंजन भी शामिल है, जोकि विशेष रूप से सामूहिक मनोरंजन के साधनों के उद्भव से पहले स्थानीय समुदायों के लिए भी महत्वपूर्ण था। त्योहार सांस्कृतिक अथवा मानवीय प्रसंगों पर केन्द्रित होते हैं, इसके साथ ये अपनी सामुदायिक सदस्यों की परम्पराओं से परिचित कराते हैं तथा बुजुर्ग, कहानियों तथा अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करते हैं जिससे परिवारों के बीच एकता बढ़ती है।

नव वर्ष आरंभ होने के अवसर पर शुभकामनाएं भेजने की परम्परा कई शताब्दी पुरानी है। अनुमानतः इसकी शुरुआत चीनी तथा मिस्त्रवासियों द्वारा मानी जाती है, जिन्होंने बुरी आत्माओं से बचने के लिए शुभकामना संदेशों का आदान-प्रदान प्रारंभ किया। नव वर्ष पर लिखित रूप से संदेश भेजने की रोमन परम्परा थी। 25 दिसम्बर को उपहार अथवा शुभकामनाएं भेजी जाती थीं ताकि 1 जनवरी तक उनका पहुंचना सुनिश्चित हो सके। यद्यपि, इस कार्य में क्रिसमस का उल्लेख नहीं होता था, परन्तु इसे कई मामलों में अंतर्निहित माना जाता था। अवकाश संबंधी शुभकामनाएं भेजना ममी को संरक्षित रखने की प्राचीन परम्परा के साथ भी जुड़ा हुआ है; जब पड़ोसी सुंदर कपड़े पहन कर दावतें मांगते हुए तथा नववर्ष की शुभकामनाएं देने हेतु द्वार-द्वार जाते थे और हर्षोल्लास के साथ छोटे नाटकों, प्रहसनों तथा मस्ती भरे गीतों का प्रदर्शन करते थे।

क्रिसमस का त्योहार काफी हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। यद्यपि, ईसा मसीह के 25 दिसम्बर को पैदा होने का कोई ऐतिहासिक अभिलेख नहीं है, फिर भी लोगों ने इस दिन को उनके जन्म दिन के रूप में मनाया शुरू कर दिया है, क्योंकि अति ठंडे देशों में निवास कर रहे लोगों के लिए यह समय उपयुक्त पाया गया और यह दिन दक्षिण अयनांत को रेखांकित करता है।

सांता क्लॉज का आख्यान क्रिसमस के त्योहार से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है, जिसमें संत निकोलस का प्रसंग है, जिनका जन्म तीसरी सदी के दौरान पातरा गांव में हुआ था। लोकप्रिय गाथाओं के अनुसार, उनके धनवान माता-पिता ने एक सच्चे क्रिश्चियन के रूप में उनका लालन-पालन किया। निकोलस जब युवावस्था में थे तभी उनके माता-पिता का एक महामारी में देहांत हो गया। निकोलस ने उत्तराधिकार में मिली धन-दौलत का उपयोग बीमार तथा जरूरतमंदों की सहायता में किया। सबसे प्रारंभिक आख्यानों में से एक जो उनके नाम से जुड़ा है, में बताया गया है कि संत निकोलस ने एक ऐसे व्यक्ति के बारे में सुना जो अपनी तीन पुत्रियों के लिए दहेज की व्यवस्था नहीं कर सका, फलस्वरूप, उसने बड़े अफसोस के साथ उन्हें दासत्व के लिए बेचने का इरादा कर लिया। संत निकोलस ने रात के समय उसकी खिड़की से सोने के तीन थैलों को डालकर उन्हें इस दुर्भाग्य से बचा लिया। संत निकोलस की यह कहानी उनकी ख्याति को एक उपहार-दाता के

रूप में चित्रित करती है। उन्होंने अपना जीवन ईश्वर की सेवा में समर्पित कर दिया तथा उन्हें अपनी युवावस्था में ही मायरा का विशप बना दिया गया। विशप निकोलस इस भू-मंडल पर जरूरतमंदों के प्रति अपनी दयालुता, बच्चों के प्रति प्रेम तथा नाविकों के प्रति उनकी चिंता के लिए प्रसिद्ध हो गए। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके आख्यान के विकास के दौरान संत निकोलस ने उन विशेषताओं और भूमिकाओं को अपना लिया था जो मूलतः गैर-ईसाई देवता, आर्टें मिस तथा पोसाइडन में मिलती थीं।

इपिस्कोपल मिनिस्टर क्लिमेंट क्लार्क मूर ने 1822 में “एन अकाउंट ऑफ ए विजिट फ्रॉम सेंट निकोलस” शीर्षक से एक लंबी क्रिसमस कविता लिखी। मूर की इस कविता में सांता क्लॉज को एक चिरयुवा, कालातीत, सफेद दाढ़ी वाले तथा लाल वस्त्रधारी व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है, जो क्रिसमस पर भेंट देता है। यह चित्रण सांता क्लॉज की आधुनिक छवि के लिए उत्तरदायी है। उनकी कविता ने सांता क्लॉज की वर्तमान छवि को लोकप्रिय बनाया, जो आठ रैंडियर द्वारा खींची जाने वाली लघु स्लेज में बैठकर क्रिसमस की संध्या में घर-घर जाकर सुपात्र बालकों को उपहार बांटता है। 1 जनवरी, 1881 में हार्पर की साप्ताहिक पत्रिका में टॉमस नस की सांता की सबसे प्रसिद्ध छवि प्रकाशित की गई, जिसमें उनकी पूर्णतः लाल तोड़, खिलौनों से भरे हुए उनके हाथ, सिगार पीते हुए दिखाया गया। सांता की यह छवि इतनी प्रसिद्ध हुई कि कई कलाकारों ने लाल तथा सफेद पोशाक में सांता के चित्र बनाने शुरू कर दिए। आज समूचे विश्व के बच्चे क्रिसमस दिवस पर रात्रि के समय स्लेज में आने वाले लाल वस्त्रधारी सांता की अमिट छवि की प्रतीक्षा करते हैं।

जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी का प्रसार हुआ है, वैसे-वैसे मनुष्य के पास शुभकामनाएं भेजने के अनेकों माध्यम उपलब्ध हो रहे हैं। सोशल मीडिया, टेक्स्ट तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से शुभकामना पत्रों के आदान-प्रदान का विस्तार हुआ है, लेकिन डाक शुभकामना संदेशों के पारेषण का सबसे लोकप्रिय तथा प्रभावी माध्यम है। खूबसूरत टिकटों से सज्जित लिफाफों में बधाई संदेश प्राप्त करने का आनंद अतुलनीय है। इससे प्राप्तकर्ता को शुभकामनाएं को भेजने में प्रेषक द्वारा किए प्रयासों और उसकी भावनाओं का एहसास होता है।

डाक विभाग 1990 से समय-समय पर विभिन्न अवसरों से संबंधित संदेश जारी करता रहा है तथा खुशियों के वाहक की भूमिका निभाने का कार्य करता रहा है। शुभकामनाओं को नया रंग-रूप देने और इन्हें और भावपूर्ण बनाने के लिए अतिरिक्त प्रयास किए जाते हैं।

शुभकामनाएं विषय पर इस वर्ष जारी रंगबिरंगे डाक-टिकटों का डिजाइन, सांता क्लॉज की मोहक दास्तान की याद ताजा करने के साथ-साथ इससे जुड़े खूबसूरत और मुस्कान भरे अहसास को भी जगाता है।

इस आनंदमय अनुभूति को थोड़ा और बढ़ाते हुए डाक विभाग, शुभकामनाएं विषय पर दो डाक-टिकट जारी कर रहा है।

**आभार:-**

मूलपाठ	:	इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/मिनियेचर शीट/शीटलेट/	:	श्री ब्रह्म प्रकाश
प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण		



तकनीकी आंकड़े  
**TECHNICAL DATA**

मूल्यवर्ग	:	1000 पैसा, 2000 पैसा
Denomination	:	1000 p, 2000 p
मुद्रित मिनिएचर शीट	:	1.0 लाख प्रत्येक
Miniature Sheet Printed	:	0.1 million
मुद्रित शीटलेट	:	15000 प्रत्येक (2 प्रकार)
Sheetlets Printed	:	15000 each (two types)
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at [http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY\\_3D.html](http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html)

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00